गणपति अथर्वशीर्ष हिंदी में अर्थ सहित

ॐ नमस्ते गणपतये।
त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि।
त्वमेव केवलं कर्ताऽसि।
त्वमेव केवलं धर्ताऽसि।
त्वमेव केवलं हर्ताऽसि।
त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि।
त्वं साक्षाद् आत्माऽसि नित्यम्॥

अर्थ:
हे गणपति! आपको नमस्कार। आप ही प्रत्यक्ष ब्रह्म (तत्व) हैं।
आप ही एकमात्र सृष्टिकर्ता, पालक और संहारक हैं।
आप ही यह सब कुछ ब्रह्म हैं।
आप साक्षात् नित्य आत्मा हैं।

ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि॥
अर्थ:

मैं ऋत (धर्मयुक्त वचन) कहता हूँ, सत्य कहता हूँ।

अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्।
अवानूचानमव शिष्यम्।
अव पूर्वां अच्यार्यान्। अव दक्षिणां अच्यार्यान्। अव उत्तरां अच्यार्यान्। अव चोर्ध्वां अच्यार्यान्। अवाधरां अच्यार्यान्।
सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्॥

अर्थ:
हे गणेश! मेरी रक्षा करें,
मेरे बोलनेवाले की,
सुननेवाले की,
दाताओं की,
धारण करनेवालों की,
विद्यार्थी और शिष्य की रक्षा करें।
सभी दिशाओं में (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर, नीचे) मेरे गुरुओं की रक्षा करें।
सर्वदिशाओं से मेरी रक्षा करें।

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः।
त्वं आनन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः।
त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि।
त्वं प्रमाणमासीद्यम्।
त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयः॥

अर्थ:
आप वाणी के स्वामी हैं, आप चेतना के स्वरूप हैं।
आप आनंदस्वरूप हैं, ब्रह्मस्वरूप हैं।
आप सत्-चित्-आनंद से युक्त और अद्वितीय हैं।
आप ही प्रमाण हैं।
आप ज्ञान और विज्ञान से परिपूर्ण हैं।

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते।
सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति।
सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति।
सर्वं जगदिदं त्वयि प्रतियति।

अर्थ:
यह संपूर्ण जगत आपसे ही उत्पन्न हुआ है।
यह संपूर्ण जगत आप में ही स्थित है।
यह संपूर्ण जगत अंत में आप में ही विलीन होता है।
यह संपूर्ण जगत आप में ही व्याप्त है।

त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः।
त्वं चत्वारि वाक्पदानि॥

अर्थ:
आप पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश हैं।
आप वाणी के चार प्रकारों (परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी) के अधिष्ठाता हैं।

त्वं गुणत्रयातीतः।
त्वं देहत्रयातीतः।
त्वं कालत्रयातीतः।
त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्।
त्वं शक्तित्रयात्मकः।
त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्।

अर्थ:
आप तीन गुणों (सत्त्व, रज, तम) से परे हैं।

आप तीन देहों (स्थूल, सूक्ष्म, कारण) से परे हैं।
आप तीन कालों (भूत, वर्तमान, भविष्य) से परे हैं।
आप मूलाधार चक्र में सदा स्थित रहते हैं।
आप तीन शक्तियों (इच्छा, ज्ञान, क्रिया) से युक्त हैं।
योगीजन आपको नित्य ध्यान में रखते हैं।

त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वं अग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

अर्थ:
आप ही ब्रह्मा हैं, आप ही विष्णु हैं, आप ही शिव (रुद्र) हैं।
आप ही इंद्र हैं, अग्नि हैं, वायु हैं, सूर्य और चंद्रमा हैं।
आप ही ब्रह्म, भूः, भुवः, स्वः (त्रिलोक) हैं।

गणादिं पूर्वं उच्चार्य वर्णादिं तदनंतरम्।
अनुस्वारः परतरः।
अर्धेन्दुलसितम्। तारेण ऋद्धम्।
एतत्तव मनुस्वरूपम्।
गकारः पूर्वरूपम्।
अकारो मध्यरूपम्।
अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्।
बिन्दुरुत्तररूपम्।
नादः संधानम्।
सग्हिता संधिः।
सैषा गणेशविद्या।
गणक ऋषिः।
निचृद्गायत्री छन्दः।
गणपतिर्देवता।
ॐ गं गणपतये नमः॥

अर्थ:
'ग' ध्वनि से प्रारंभ करके, फिर 'अ' ध्वनि और उसके बाद अनुस्वार और चंद्रबिंदु से मिलकर 'गं' बीजमंत्र की उत्पत्ति होती है।
यह गणेश विद्या का स्वरूप है।
इसका ऋषि 'गणक', छंद 'गायत्री', देवता 'गणपति' हैं।
मंत्र: ॐ गं गणपतये नमः।

एकदन्ताय विद्महे। वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्॥

अर्थ:
हम एकदंत (एकदंती गणेश) को जानते हैं, वक्रतुण्ड (टेढ़े सूँड़ वाले) का ध्यान करते हैं, वह दंती (गणेश) हमें प्रेरणा दें।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर् बिभ्राणं मूषकध्वजम्।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः॥

अर्थ:
जो भक्त नित्य निम्नलिखित स्वरूप में गणपति का ध्यान करता है:
एकदंती, चार भुजाओं वाले, हाथों में पाश, अंकुश, मोदक और वरमुद्रा धारण किए हुए,
मूषक (चूहा) जिनका वाहन है,
लाल रंग के, लम्बोदर (बड़ा पेट), पंखे जैसे कान वाले,
लाल वस्त्र और लाल चंदन से लिप्त शरीर वाले,
लाल फूलों से पूजित, भक्तों पर कृपा करने वाले,
जगत के कारण और अच्युत (नाशरहित) देवता हैं।
जो पुरुष प्रकृति और पुरुष से परे हैं।
ऐसे गणेश का ध्यान जो योगी करता है, वह श्रेष्ठ योगी हो जाता है।

निजविग्णविनाशनं नित्यम्।
संपदां सन्ततिं करोतु मे।
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय।
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय॥
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय।
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

अर्थ:
हे विघ्नेश्वर! जो मेरे विघ्नों का नाश करें,
हमेशा समृद्धि प्रदान करें,
देवताओं के प्रिय, लम्बोदर, सबका कल्याण करनेवाले,
नागमुखवाले, वेद-यज्ञों से शोभायमान,
गौरीपुत्र, हे गणनाथ! आपको बारंबार प्रणाम।

॥ इति श्री गणपति अथर्वशीर्षं संपूर्णम् ॥